गुजरात मे स्त्री सक्षमीकरण और हीरा बहेन सेठ

SHIYAL JAYDEEP GANESHBHAI
M. A.I,
DEPT OF HISTORY,
MAHARAJA KRISHNAKUMARSINHJI,
BHAVNAGAR UNIVERSITY,
BHAVNAGAR.
MO: 8128032845
jaydeepshiyal04@gmail.com

प्रस्तावना :

भारत में जब जब बात स्त्री जागृति या स्त्री शिक्षण की बात आए तब तक हमारे मन में बहुत से नाम आते हैं। जिन्होंने स्त्री के स्थान को समाज में आगे बढ़ाने के लिए अपने आप को संपूर्ण उसमे में झोंक दिया और स्त्री जागृति में अपना योगदान दिया। ऐसे ही गुजरात में स्त्री जागृति और बाल कल्याण के लिए हीरा बहन सेठ जो कि एक छोटे से गांव पाटन वाव (राजकोट) में उन्होंने अपने कार्य को शुरू किया , उनको गुजरात के गांव-गांव घूमकर बालकल्याण और स्त्री जागृति की प्रवृत्ति कि। .

गुजरात मे स्त्री शिक्षण की शुरुआत :

19वीं शताब्दी में भारत में बालिका शिक्षा के लिए व्यवस्थित प्रयास शुरू किए गए।19वीं शताब्दी की शुरुआत में लंदन मिशनरी सोसाइटी और आयरिश प्रेस्बिटेरियन (आईपी) जैसे मिशनरी संगठनों ने गुजरात में ईसाई धर्म के प्रचार के साथ-साथ बालिका शिक्षा की गतिविधि शुरू की। आई.पी. मिशन ई. 1841-42 मे शुरू हुआ। इस दौरान सौराष्ट्र में राजकोट और पोरबंदर और घोघा में दो लड़कियों के स्कूल स्थापित किए गए। इस प्रकार सौराष्ट्र में बालिका शिक्षा प्रारंभ करने का श्रेय आई.पी. को जाता है। मिशन पर जाता है। लड़कियों की शिक्षा की पड़ताल करने पर पता चला कि माता-पिता खुद लड़कियों के बारे में जानकारी छुपाते हैं या देने से इनकार करते हैं। इतना ही नहीं, यह प्रचलित मान्यता थी कि यदि लड़कियों को शिक्षा दी जाती है तो वे विधवा हो जाती हैं। हालाँकि, समृद्ध संस्कृति के साथ-साथ उच्च और शाही परिवारों में भी महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान दिया जाता था। लोगों में अलग शिक्षक रखकर लड़कियों को शिक्षित करने की समझ विकसित नहीं हुई थी। ऐसी स्थिति में मिशनरियों ने बालिका शिक्षा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

महिला सशक्तिकरण और स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में हीरा बहन सेठ का प्रदान :

जन्म और शुरुआती कार्य :

हीराबहन सेठ का जन्म 15 दिसम्बर, 1915 को राजकोट जिले के पटनावाव गाँव में हुआ था, जिनके मन में बहनों का सम्मान, बच्चों के प्रति प्रेम और समाज सेवा के गुण थे। उनके पिता साधन संपन्न और दानशील थे। सेठ परिवार पहले से ही परोपकारी, उदार, किसी के लिए भी काम करने को तैयार और देशभक्त था। उनके मन में देशभक्ति बहुत थी। इसलिए उनके जीवन में बचपन से ही पारिवारिक संस्कार डाले गए। पढ़ाई में मेधावी होने के कारण हीराबेहन पढ़ाई में हमेशा अव्वल रही। उन्होंने कर्वे विश्वविद्यालय से स्नातक किया। स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें कारावास भी भुगतना पड़ा। उसके बाद आजीवन समाज सेवा के कार्य करने के लिए प्रेरित हुए।

हीरा बहेन के समाज सेवा और स्त्री शिक्षण के क्षेत्र मैं कार्य :

हीराबहन ने समाज में महिलाओं के अपमान, महिलाओं की आत्महत्या, हठी तत्वों द्वारा खून के व्यापार, गाँव में प्रचलित अज्ञानता, मूर्तिपूजा, चुगली और अन्य बुराइयों को रोकने की कोशिश की। इन प्रयासों में सुश्री पुष्पभाई मेहता, ढेबरभाईआदि के मार्गदर्शन और अपने चाचा गुलाब चंद शे की लगन और प्रेरणा के बाद उन्होंने समाज सेवा के क्षेत्र में पहल की। 1945 में, राजकोट में महिलाओं और बच्चों के लिए पहला विकास केंद्र स्थापित किया गया था। इस विकासगृह का निर्माण कांता बहेन की स्मृति में किया गया था। हीराबेन सेठ ने इस विकासगृह का नेतृत्व और कारोबार संभाला। और उसको अच्छी तरह से संभाला। हीराबेन का लक्ष्य केवल एक ही था कि परित्यक्त समाज द्वारा आहत या संकटग्रस्त किसी भी विधवा या अनाथ बहन को बच्चों को पढ़ाकर और रोजगारपरक प्रशिक्षण देकर सामाजिक जीवन में उनका पुनर्वास किया जाए। उन्होंने श्री कांता महिला विकास केंद्र को उस लक्ष्य की प्राप्ति का केंद्र बनाया, अथक परिश्रम किया और उसे प्राप्त करने के लिए दिन-रात मेहनत की। आज इस संस्था के माध्यम से हजारों बहनें अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत कर रही हैं। आज भी यह समाज सेवा का कार्य निरन्तर चल रहा है और वे असंख्य समाजसेवियों को इस मार्ग पर चलने के प्रेरणास्रोत बन रहे हैं।

1950 से 1955 तक राजकोट जिले के गाँव ने फिर से बहनों के जागरण अभियान को आगे बढ़ाया, बाल कल्याण और महिला उत्थान की गतिविधियों को अंजाम दिया,तीस स्थानों पर समाज कल्याण केंद्र स्थापित किए और महिलाओं के लिए विकास परियोजना के माध्यम से समाज सुधार का प्रेरक कार्य किया।

समाज सुधार गतिविधियों को करने के बजाय वे राजनीति की ओर आकर्षित हुए और 1957 में वांकानेर क्षेत्र की विधानसभा सीट से भारी बहुमत से चुने गए। और विधान सभा के सदस्य के रूप में, उन्होंने महिलाओं और बच्चों के कल्याण कानूनों को बनाने में मदद की। 1964 से 1971 तक, वह बाल न्यायालय में मानद मजिस्ट्रेट थे। इस दौरान बच्चों की कई समस्याओं का समाधान किया गया।

वह द्विभाषी राज्य मुंबई में समाज कल्याण बोर्ड के सदस्य थे और बाद में 1966 से 1976 तक गुजरात राज्य समाज कल्याण बोर्ड के सदस्य थे, जब गुजरात राज्य की स्थापना हुई थी। और सामाजिक सुरक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया।

हीरा बहन को मिले सम्मान:

महिलाओं और बच्चों की सेवा के अलावा, उन्हें हिरजन सेवा, निरक्षरता निवारण, प्रौढ़ शिक्षा, रोजगारोन्मुख शिक्षा और बहनों के लिए प्रशिक्षण आदि क्षेत्रों में उनकी असाधारण सेवा के लिए 1984 में समाज कल्याण में सर्वश्रेष्ठ कार्य हेतु उन्हें भारत सरकार की ओर सेबाल कल्याण के क्षेत्र में गतिविधियों के लिए राज्य पुरस्कार और 1991 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्तमान में, हीराबहन की बहन डॉ. सुशीला बहन सेठ श्री कांता स्त्री विकासगृह का प्रबंधन संभाल रही हैं।

समापन:

हीराभान के विचार स्पष्ट और निडर थे। उनका आंतरिक और बाहरी जीवन बहुत साफ था। एक धनी परिवार में जन्म लेने पर भी वे बड़े सहज और सरल स्वभाव के थे। और किसी की भी मदद के लिए तैयार रहते हैं। वे स्त्रियों और बच्चों की सेवा को सुखद कार्य मानते थे। और श्री हीराबेन को श्री ढेबरभाई की स्मृति में महिला शिक्षा और जागरूकता कार्य करने के लिए पुरस्कार के लिए चुना गया था।

संदर्भ ग्रंथ :

१. Muchaddia, Pankajkumar ,Ph.D Thesis: Women teachers of primary schools a sociological study with reference the schools run by Rajkot municipal corporation Name of the Researcher

2. गुजरात ना नारी रतनो : मिनाक्षी बहन ठाकुर

3 सौरास्ट्र स्वतंत्र सैनिको अने लडतो : जया बहन शाह प्रकाशक : सौरास्ट्र रचनात्मक समिति सेवा ट्रस्ट